प्रातःक्लास पिताश्री ओमशांति 20.11.67

रिकार्ड–आज अंधेरे में हैं हम इंसान.....ओमशांति। रुहानी बच्चों ने क्या सुना?और किसने पूछा?रुहानी बच्चों से सिर्फ रुहानी बाप ही प्रश्न पूछते हैं ;क्योंकि बच्चों को पहले2 ही समझाया जाता है आत्मअभिमानी हो बैठो। यह पहले नम्बर की उंच ते उंच सब्जेक्ट। जो भी अच्छे पुरुषार्थी होंगे ब्राह्मण कुलभूषण वह आत्माभिमानी हो बैठेंगे। तुम्हारा कुल भारत तो क्या सारे विश्व से न्यारा है। तुम हो सच्चे प्रजापिता ब्रह्मा कु.मुखवंशावली सर्वोत्तम ब्राह्मण कुलभूषण;क्योंकि तुम डायरैक्ट ईश्वर के सन्तान हो। यूं तो भाई2 तो सभी आत्माएं हैं, जिसको ब्रदर्सहुड कहा जाता है। सभ का बाप एक भगवान है और उनको कहा जाता है उंच ते उंच भगवान। रचता,किसका?सारी रचना का। रचता और रचना के ज्ञान को कोई भी ऋषि–मुनि आदि नहीं जानते। वह भी नेति2 कहते गये अर्थात् हम रचता को नहीं जानते, गोया नास्तिक हो गए। रचना को भी नहीं जानते तो नास्तिक हुए। डबल नास्तिक हो गए। बाप कहते हैं पहले अल्फ रचता को याद करो तो रचना के आदि,मध्य,अंत का समाचार बाप आपे ही बताय देंगे। तुमको रचना की आदि,मध्य,अंत का ज्ञान नहीं है। तो जरूर जानने वाला ही समझावेंगे। तुमको पूछने की आवश्यकता नहीं रहती। तुम तो तुच्छ बुद्धि वा पत्थरबुद्धि थे। तब तो गीत में भी गाते हैं हे भगवान ज्ञान का दीपक आकर जलाओ ;क्योंकि हम अंधेरे में हैं। द्वापर–कलियुग को अंधेरी रात कहा जाता है। अंधेरी रात शुरू ही होती है कलहयुग के अंत में। घोर अंधियारा होता है तब पुकारते हैं आकर हमारा ज्ञान दीपक जगाओ। आत्मा को ज्ञान का तीसरा नेत्र दो तो हम जाग जावें। सतयुग में तो ऐसे नहीं पुकारेंगे कि हमारा ज्ञान दीपक जगाओ। यह गीत भी इस समय निकलती है। सतयुग में न ऐसे गीत बनावेंगे न गावेंगे। वहां तो सबकी ज्योत जग जाती है। तुमको ज्ञान का तीसरा नेत्र बाप आकर देते हैं। ज्ञान का सागर तो एक ही बाप है। अनेक हो (न) सके। वह एक ही सर्व का सदगति दाता है। वह समझते हैं हमारे में शास्त्रों का ज्ञान है। वह है भक्ति। सारा भारत तो क्या सारे विश्व में इस समय भक्ति का पहरा है। इनको भक्ति कल्ट कहा जाता है। तुम बच्चों को अब ज्ञान सूर्य का तीसरा नेत्र दे रहे हैं। ज्ञान मिलता ही ब्राह्मणों को। न देवताओं को,न शूद्रों को (यह) ज्ञान है। वर्ण भी गाई जाती है। चित्रों में दिखाते हैं। सर्वोत्तम कुल है ही ब्राह्मणों का। ब्राह्मण चोटी है (ना) । ब्राह्मणों के लिए भी गाया जाता है एक है प्रजापिता ब्रह्मा के मुख वंशावली ब्राह्मण। दूसरे हैं वह ब्राह्मण। उनके लिए फिर ऐसे नहीं कहेंगे कि प्रजापिता ब्रह्मा के मुखवंशावली हैं। नहीं। वह हैं कुखवंशावली ब्राह्मण ;क्योंकि विकार से पैदा होते हैं। तुम तो एडॉप्टेड बच्चे हो। प्रजापिता ब्रह्मा के ब्राह्मण–ब्राह्मणियां इतने ढेर कहां से आये। यह एडॉप्शन होते हैं। क्रियेटर पुरुष पहले2 कन्या को एडॉप्ट करते हैं। फिर उनको माता कहा जाता है। ऐसे नहीं कहेंगे कि पैदा किया। एडॉप्ट करते हैं। तुम सब हो एडॉप्टेड बच्चे। नहीं तो प्रजापिता ब्रह्मा के इतने ढेर ब्रह्माकुमारियां कहां से आवे। कन्या को एडॉप्ट करते हैं फिर उनको बच्चा पैदा होता है तो माता कहा जाता है। फिर मां बूढ़ी होती है तो दादी कहा जाता। यहां दादी आदि की बात नहीं। सब ब्रह्माकुमार कुमारियां भाई–बहन हैं। हम भगवान के सन्तान हैं तो भाई–भाई हो गए। फिर प्रजापिता ब्रह्मा के एडाप्टेड बच्चे भाई–बहन हुए। तुम्हारा सिर्फ यह एक ही सम्बंध है। बस। भाई–बहन हो गए तो कुदृष्टि वा क्रिमिनल आई रखना क्रिमिनल एसॉल्ट हो जाता है। हम भाई–बहन हैं यह पक्का2 याद रहे। इसमें ही मेहनत है। इस क्रिमिनल दृष्टि पर जो जीत पाते हैं वही स्कॉलरशिप पाते हैं। विजयमाला के दाने बनते हैं। यह डीटी किंगडम स्थापन हो रही है। यह ल.ना. सतयुग के मालिक हैं ना। उन्होंने यह पद कैसे प्राप्त किया?पुरुषोत्तम संगमयुग पर। पद हमेशा पढ़ाई से ही प्राप्त किया जाता है। यह है रुहानी पढ़ाई, जो रुहानी बाप रुहानी बच्चों को बैठ पढ़ाते हैं। अंग्रेजी में इसको स्प्रीचुअल नालेज भी कहा जाता है। स्प्रीचुअल नालेज सिवाय ब्राह्मणों के और कोई पास होती नहीं। मनुष्यों को यह भी पता नहीं है कि भारत का प्राचीन स्प्रीचुअल रुहानी योग था, न कि जिस्मानी। अभी तुमको पावन बनना है तो बुद्धि का योग..... (मुरली अधूरी है)